



2026:AHC-LKO:3273-DB

इलाहाबाद उच्च न्यायालय
लखनऊ

आपराधिक अपील संख्या - 980 वर्ष 2001

भूलन और अन्य

.....अपीलकर्ता(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

अपीलकर्ता (ओं) के अधिवक्ता

: शिशिर प्रधान, कुँवर धनंजय सिंह

प्रतिवादी (यों) के अधिवक्ता

: शासकीय अधिवक्ता ओंकार सिंह,
राजेश श्रीवास्तव, उमा कांत गुप्ता

ए.एफ.आर.

न्यायालय संख्या - 10

आरक्षित तिथि : 26.11.2025

निर्णय तिथि : 16.01.2026

माननीय न्यायमूर्ति रजनीश कुमार

माननीय न्यायमूर्ति ज़फ़ीर अहमद

(माननीय न्यायमूर्ति ज़फ़ीर अहमद द्वारा प्रदत्त)

1. श्री अखिलेश कुमार मिश्रा (जो अपीलकर्ता संख्या 2 और 3 के विद्वान अधिवक्ता श्री कुँवर धनंजय सिंह की ओर से उपस्थित हुए), अपीलकर्ता संख्या 4 के विद्वान अधिवक्ता श्री शिशिर प्रधान, राज्य की ओर से विद्वान ए.जी.ए. श्री अरुणेंद्र, और शिकायतकर्ता के विद्वान अधिवक्ता श्री उमा कांत गुप्ता की दलीलें सुनीं और अभिलेख का अवलोकन किया।
2. ऊपर बताई गई आपराधिक अपील, 15.10.2001 को रायबरेली के 7वें अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश द्वारा एस.टी. सं. 210 वर्ष 1995 (राज्य बनाम भूलन एवं अन्य) में दिए गए आदेश और फैसले से जुड़ी है। यह मामला केस अपराध संख्या 13 वर्ष 1993 से निकला

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिये प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



- है, जिसमें आवेदकों को दोषी ठहराया गया है और उन्हें आई पी सी की धारा 304 (धारा 34 के साथ) के तहत आजीवन कारावास; आई पी सी की धारा 325 (धारा 34 के साथ) के तहत एक साल का कठोर कारावास; आई पी सी की धारा 504 और 323 (धारा 34 के साथ) के तहत छह महीने का कठोर कारावास; और आई पी सी की धारा 506(2) के तहत एक साल का कठोर कारावास की सज़ा सुनाई गई है। इसके साथ ही, उन पर 2000/- रुपये का जुर्माना भी लगाया गया है, और जुर्माना न भरने की स्थिति में, प्रत्येक को छह महीने का अतिरिक्त कठोर कारावास भुगतना होगा। इसमें आगे यह भी प्रावधान किया गया है कि ये सभी सज़ाएँ एक साथ चलेंगी।
3. अपीलकर्ता संख्या 1, अर्थात् भुल्लन, की अपील के लंबित रहने के दौरान मृत्यु हो गई; अतः, अपीलकर्ता संख्या 1 की ओर से की गई अपील समाप्त मानी जाएगी। अब यह अपील केवल अपीलकर्ताओं संख्या 2, 3 और 4 की ओर से ही जारी रहेगी।

अभियोजन पक्ष की कहानी संक्षेप में:

4. संक्षेप में, अभियोजन पक्ष की कहानी यह है कि शिकायतकर्ता लल्ला प्रसाद, जो जागेश्वर पासी (मृतक) के बेटे और गांव अशरफपुर, पुलिस थाना नसीराबाद, जिला रायबरेली के निवासी हैं, ने एक लिखित रिपोर्ट (प्रदर्श क-1) दर्ज कराई, जिसमें उन्होंने बताया कि उनके और गांव के ही भुल्लन तथा अन्य लोगों के बीच ज़मीन को लेकर एक पुराना विवाद चल रहा है। 04.03.1993 को, रात लगभग 8:00 बजे, शिकायतकर्ता अपने पिता जागेश्वर (मृतक) और अपने साथियों—ओम प्रकाश (अधिवक्ता) और हरि प्रकाश—के साथ नसीराबाद से घर लौट रहे थे। जब वे अशरफपुर पुल से थोड़ा आगे पहुँचे, तो आरोपी व्यक्ति—जिनमें शिवनाथ का बेटा भुल्लन (जिसे आगे ए1 कहा जाएगा) और राम दुलारे के बेटे सूरजपाल (ए2), बृजलाल (ए3) और जगतपाल (ए4) शामिल थे—जो वहाँ लाठियों और डंडों से लैस होकर बैठे हुए थे, उन्होंने उन्हें रोक लिया और गालियाँ देना शुरू कर दिया। इसके बाद, उन्होंने शिकायतकर्ता के पिता जागेश्वर और साथ ही ओम प्रकाश पर लाठियों और डंडों से हमला कर दिया।
5. इसके अलावा, जब हरि प्रकाश ने बीच-बचाव करने की कोशिश की, तो उन पर भी हमला किया गया। मदद के लिए चीख-पुकार सुनकर, गाँव के लोग—जिनमें शीतल



- के बेटे विश्राम, बेचू के बेटे गयादीन, नट्टू के बेटे उदयराज आदि शामिल थे—मौके पर पहुँचे; जिसके बाद आरोपी जान से मारने की धमकियाँ देते हुए अपने घरों की ओर भाग गए। शिकायतकर्ता के पिता के हाथों और पैरों में फ्रैक्चर आ गया, साथ ही उनके शरीर पर कई अन्य चोटें भी आईं। शिकायत दर्ज कराने के लिए शिकायतकर्ता उन्हें एक चारपाई (खाट) पर लिटाकर पुलिस थाने ले गया, जबकि ओम प्रकाश और हरि प्रकाश को उनके-उनके परिवार वाले घर ले गए।
6. लिखित रिपोर्ट के आधार पर आई पी सी की धारा 323, धारा 325, धारा 504 और धारा 506 के तहत एक एफ आई आर दर्ज की गई (प्रदर्श क -2) और इसकी जी.डी. एंट्री की गई (प्रदर्श क-3)। जागेश्वर, ओम प्रकाश और हरि प्रकाश की चोटों की विवेचना 04.03.1993 को जैस के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर द्वारा की गई (प्रदर्श क-15, प्रदर्श क-16 और प्रदर्श क-17) और हरि प्रकाश तथा ओम प्रकाश के एक्स-रे 05.03.1993 को किए गए (क्रमशः प्रदर्श क-10, 11 और प्रदर्श क-12, 13)। इसके अलावा, जागेश्वर की मृत्यु रायबरेली के जिला अस्पताल में हो गई, इसलिए मृतक का पोस्टमार्टम रायबरेली के जिला अस्पताल में किया गया (प्रदर्श क-14) और जब इस संबंध में जानकारी पुलिस स्टेशन को मिली, तो इसकी जी.डी. एंट्री की गई (प्रदर्श क-18)। विवेचना अधिकारी ने घटनास्थल का नक्शा (प्रदर्श क-9), शव का पंचनामा (प्रदर्श क-20), आर.आई. को पत्र (प्रदर्श क-21), सी.एम.ओ. को पत्र (प्रदर्श क-22), शव का चालान (प्रदर्श क-23), शव का रेखाचित्र (प्रदर्श क-24) और मुहर का नमूना (प्रदर्श क-25) तैयार किया।
7. विवेचना पूरी होने पर, सभी अपीलकर्ताओं के खिलाफ आई.पी.सी. की धारा 323, धारा 325, धारा 304, धारा 34, धारा 504, और धारा 506(2) के तहत एक चार्जशीट (प्रदर्श क-8) पेश की गई और मामले को सत्र न्यायालय, रायबरेली को सौंप दिया गया। सभी अपीलकर्ताओं ने खुद को निर्दोष बताया और घटना में अपनी भागीदारी या मिलीभगत से इनकार किया।
8. अपना मामला साबित करने के लिए, अभियोजन पक्ष ने दस गवाहों का परीक्षण किया; पी डब्लू-1 लल्ला प्रसाद (शिकायतकर्ता), पीडब्लू-2 ओम प्रकाश खरे, पी डब्लू-3 हरि प्रकाश खरे, जो घटना के प्रत्यक्षदर्शी गवाह हैं, और पीडब्लू-4 एच.सी.पी. राम सहाय



भार्गव, पी डब्लू -5 देवी प्रसाद यादव, पी डब्लू-6 विनोद प्रकाश, पी डब्लू-7 डॉ. एस.एस. त्रिवेदी, पी डब्लू-8 डॉ. यू.सी. शर्मा, पी डब्लू-9 डॉ. के.पी.एस. चौहान, और पी डब्लू-10 एस.आई. साधना गुप्ता, जो औपचारिक गवाह हैं और जिन्होंने विवेचना के विभिन्न चरणों और मेडिकल सबूतों को साबित किया है।

9. अपीलकर्ताओं ने अपने बचाव में कोई मौखिक सबूत पेश नहीं किया। सीआर.पी.सी. की धारा 313 के तहत अपने बयानों में, अपीलकर्ताओं ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया और बस इस मामले में अपनी संलिप्तता से इनकार कर दिया। उन्होंने आगे कहा कि उन्हें पहले से चली आ रही दुश्मनी के आधार पर इस मामले में झूठा फंसाया गया है। इस प्रकार, अपीलकर्ताओं ने खुद को निर्दोष बताया।
10. रिकॉर्ड पर मौजूद मौखिक और दस्तावेजी सबूतों के व्यापक मूल्यांकन के बाद, माननीय ट्रायल कोर्ट ने सभी अपीलकर्ताओं को दोषी ठहराया और उन्हें आईपीसी की धारा 304 सहपठित धारा 34 के तहत आजीवन कारावास, आई पी सी की धारा 325 सहपठित धारा 34 के तहत एक वर्ष का कठोर कारावास, आई पी सी की धारा 504 सहपठित धारा 34 और धारा 323 सहपठित धारा 34 के तहत छह महीने का कठोर कारावास, तथा आईपीसी की धारा 506(2) के तहत एक वर्ष का कठोर कारावास की सज़ा सुनाई; इसके साथ ही उन पर 2000/- रुपये का जुर्माना भी लगाया गया, और जुर्माना न भरने की स्थिति में प्रत्येक को छह महीने का अतिरिक्त कठोर कारावास भुगतना होगा। इसमें आगे यह भी निर्देश दिया गया है कि सभी सज़ाएँ एकसाथ चलेंगी।

अभियुक्त-अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता द्वारा प्रस्तुत निवेदन :-

11. अभियुक्त-अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने यह दलील दी कि ट्रायल कोर्ट ने इस मामले का फैसला महज़ अनुमान के आधार पर किया है और अपीलकर्ताओं को झूठा फंसाया गया है। आगे यह भी तर्क दिया गया कि यह घटना रात में हुई थी, जब रोशनी का कोई साधन नहीं था, और किसी ने भी इस घटना को होते हुए नहीं देखा। आगे यह भी तर्क दिया गया कि अपराध करने का कोई हेतुक मौजूद नहीं है, क्योंकि विवादित ज़मीन ग्राम सभा की है। आगे यह भी तर्क दिया गया कि प्रत्यक्षदर्शी और मेडिकल सबूतों के बीच विरोधाभास है। आगे यह भी तर्क दिया गया कि किसी भी स्वतंत्र गवाह की विवेचना नहीं की गई है और अपराध करने का कोई पूर्व-नियोजित इरादा मौजूद नहीं



था। इसलिए, विवादित फैसला और आदेश मान्य नहीं हैं और इसे रद्द किया जाना चाहिए, तथा अपील को स्वीकार किया जाना चाहिए।

विद्वान ए.जी.ए. द्वारा प्रस्तुत निवेदन :-

12. इसके विपरीत, विद्वान ए.जी.ए. ने अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता द्वारा प्रस्तुत दलीलों का जोरदार विरोध किया है। उन्होंने आगे यह भी कहा कि विवादित फैसला और आदेश, विद्वान ट्रायल कोर्ट द्वारा, रिकॉर्ड पर उपलब्ध सबूतों और सामग्री पर विचार करने के बाद, कानून के अनुसार ही सही तौर पर पारित किया गया है। अतः, विद्वान ए.जी.ए. ने कहा कि आरोपी-अपीलकर्ताओं को कानून के अनुसार ही सही तौर पर दोषी ठहराया गया है और तदनुसार सज़ा दी गई है। विवादित फैसले और आदेश में कोई भी गैर-कानूनी बात या त्रुटि नहीं है। आगे यह भी कहा गया है कि यह अपील गलतफहमी और बेबुनियाद आधारों पर दायर की गई है, जिसे खारिज किया जाना चाहिए।

मौखिक गवाहियाँ:

वर्तमान अपील में उठने वाले मुद्दों को समझने के लिए, अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत मौखिक साक्ष्य की संक्षेप में विवेचना करना उचित है।

13. **पीडब्लू-1 लल्ला प्रसाद**, जो मृतक जगेश्वर के बेटे और शिकायतकर्ता हैं, 10.08.2000 को ट्रायल कोर्ट के सामने पेश हुए और गवाही दी कि उनके परिवार और अपीलकर्ताओं के बीच ज़मीन को लेकर एक विवाद चल रहा था। उन्होंने आगे गवाही दी कि घटना वाले दिन, जब वे अपने पिता जगेश्वर, ओम प्रकाश (अधिवक्ता) और हरि प्रकाश के साथ नसीराबाद से घर लौट रहे थे, तो अपीलकर्ताओं ने उन्हें रोका और लाठियों और डंडों से उन पर हमला किया। शुरू में, अपीलकर्ताओं ने उनके पिता और ओम प्रकाश को निशाना बनाया, लेकिन जब हरि प्रकाश ने उन्हें ललकारा, तो उन पर भी हमला किया गया। उन्होंने आगे गवाही दी कि यह घटना मट्टन नाले के पास हुई, जो अशरफपुर गाँव से लगभग एक किलोमीटर दूर है। उन्होंने आगे गवाही दी कि जब उन्होंने मदद के लिए गुहार लगाई, तो विश्राम, गयादीन और उदयराज नाम के गाँव वाले मौके पर पहुँचे, जिसके बाद आरोपी गालियाँ देते हुए और जान से मारने की धमकियाँ देते हुए गाँव की ओर भाग गए। उन्होंने आगे गवाही दी कि उनके पिता को उनकी बाईं कलाई और पैर



पर चोटें आईं। उन्होंने आगे गवाही दी कि उन्होंने गाँव वालों के साथ मिलकर अपने पिता को एक चारपाई (खाट) पर लिटाकर पुलिस स्टेशन पहुँचाया, जबकि ओम प्रकाश और हरि प्रकाश को दूसरे लोग गाँव ले गए। पुलिस स्टेशन में एक लिखित रिपोर्ट (प्रदर्श क-1) दर्ज कराई गई। उन्होंने आगे गवाही दी कि रिपोर्ट दर्ज कराने के बाद, उनके पिता का जायस अस्पताल में मेडिकल चेकअप कराया गया और शुरुआती इलाज मिलने के बाद, उन्हें ज़िला अस्पताल रायबरेली रेफर कर दिया गया। उन्होंने आगे गवाही दी कि उनका बयान विवेचना अधिकारी ने दर्ज किया था और 05.03.1993 को ज़िला अस्पताल में उनके पिता की चोटों के कारण मृत्यु हो गई।

14. जिरह के दौरान, उसने गवाही दी कि अपीलकर्ता लाठी और डंडे लिए हुए थे, और ए1 के पास एक कुल्हाड़ी भी थी। उसने आगे गवाही दी कि उसके पिता के बाएं हाथ और बाएं पैर पर जो चोटें आई थीं, वे उसी कुल्हाड़ी से लगी थीं, जबकि ओम प्रकाश और हरि प्रकाश को कुल्हाड़ी से कोई चोट नहीं लगी थी। उसने आगे गवाही दी कि गांव वाले, यानी विश्राम, गयादीन, उदयरज, जो मौके पर पहुंचे थे, वे निहत्थे थे और अशरफपुर की तरफ से आए थे। उसने आगे गवाही दी कि उसके पिता की लुंगी फटी हुई थी और चोटों पर बांधी हुई थी। उसने आगे गवाही दी कि जब वह पुलिस स्टेशन के लिए निकला, तो ओम प्रकाश और हरि प्रकाश घटना वाली जगह पर ही पड़े रह गए थे, और उसे नहीं पता कि बाद में उन्हें गांव कौन लाया। उसने आगे गवाही दी कि पुलिस स्टेशन लगभग तीन किलोमीटर दूर था और वह रात करीब 9:00 बजे वहां पहुंचा। उसके लगभग 1-2 घंटे बाद, ओम प्रकाश और हरि प्रकाश भी पुलिस स्टेशन पहुंच गए। उसने आगे गवाही दी कि एफ आई आर उसकी मौजूदगी में दर्ज की गई थी, जब वह पुलिस स्टेशन के अंदर था। अगली तारीख, यानी 19.08.2000 को, उसने गवाही दी कि एफ आई आर असल में पुलिस स्टेशन के बाहर, गेट से 2-4 कदम दूर लिखी गई थी; और उसने अपने पिछले बयान से पलटते हुए कहा कि पिछली तारीख को दी गई उसकी गवाही गलत थी, क्योंकि उसे जान से मारने की धमकी दी गई थी। उसने आगे गवाही दी कि प्रदर्श क.-1 में कोई दूसरा पन्ना नहीं था। उसने आगे गवाही दी कि ज़मीन के विवाद में उसके पिता वादी थे, लेकिन घटना वाले दिन न्यायालय में कोई सुनवाई तय नहीं थी। उसने आगे गवाही दी कि उसे उस विवाद की मौजूदा स्थिति के बारे में कोई



जानकारी नहीं थी, हालांकि उसने इस बात की पुष्टि की कि उसके पिता पैरवी के लिए रायबरेली जाया करते थे। उसने आगे गवाही दी कि घटना वाले दिन शाम लगभग 3-4 बजे उसके पिता नसीराबाद के लिए निकले थे, जहां वह (पी डब्लू -1) उनके (पिता के) साथ गया था। उन्होंने आगे बयान दिया कि आस-पास अंधेरा होने और अपनी घबराहट के कारण, वह गांव वालों - विश्राम, गयादीन और उदयराज - के अलावा वहां जमा हुए लोगों को पहचान नहीं पाए। उन्होंने आगे बताया कि वह और उनके पिता शाम करी 5:00 बजे नसीराबाद पहुंचे और नसीराबाद बस स्टैंड चौराहे पर हरि प्रकाश और ओम प्रकाश का कुछ घंटों तक इंतज़ार किया, क्योंकि उनके क्रमशः इलाहाबाद और रायबरेली से लौटने की उम्मीद थी। उन्होंने आगे बयान दिया कि हमला होने पर उनके पिता बेहोश हो गए थे, हालांकि बाद में पुलिस स्टेशन में उन्हें होश आ गया और उनका बयान भी दर्ज किया गया। उन्होंने आगे बताया कि अपील करने वालों में से किसी ने भी उन पर हमला नहीं किया, भले ही वह चिल्ला रहे थे। उन्होंने आगे बयान दिया कि मट्टन नाले के पश्चिम में नसीराबाद की ओर जाने वाली एक पक्की सड़क बन रही थी, जबकि अशरफपुर की ओर जाने वाली सड़क ईंटों से बनी थी और उसके आस-पास कोई पत्थर या बजरी नहीं थी; हालांकि पुल के पास पानी के बहाव को रोकने के लिए चट्टानें थीं, लेकिन उसके नीचे कोई चट्टान नहीं थी। उन्होंने आगे बयान दिया कि अपने पिता को चारपाई पर उठाते और लिटाते समय उनकी शर्ट पर खून का कोई दाग नहीं लगा।

15. **पी डब्लू -2, ओम प्रकाश खरे**, जो ज़मीन विवाद के मामले में अधिवक्ता हैं, ने गवाही दी कि 04.03.1993 को रात लगभग 8:00 बजे, जब वे नसीराबाद से अपने गाँव अशरफपुर लौट रहे थे, तब उनके साथ हरि प्रकाश खरे (उनके भाई), जागेश्वर और लल्ला प्रसाद भी थे; इसी दौरान मट्टन नाले के पास अपीलकर्ताओं ने उन पर हमला कर दिया। उन्होंने आगे गवाही दी कि अपीलकर्ताओं के पास लाठियाँ और डंडे थे, और इस हमले में उन्हें, उनके भाई और जागेश्वर को चोटें आईं। उन्होंने आगे बताया कि उनकी चीख - पुकार सुनकर गाँव के लोग, जिनका नाम विश्राम पासी, उदयराज और गयादीन था, उनकी मदद के लिए वहाँ आ गए; यह देखकर आरोपी लोग गालियाँ देते हुए और जान से मारने की धमकियाँ देते हुए गाँव की तरफ भाग गए। उन्होंने आगे गवाही दी कि घटना के बाद गाँव वाले उन्हें उनके घर ले गए, जबकि जागेश्वर को पुलिस थाने ले



जाया गया। उन्होंने आगे बताया कि बाद में वे, हरि प्रकाश और गाँव के अन्य लोग एक ट्रैक्टर से पुलिस थाने पहुँचे। उन्होंने आगे गवाही दी कि एफआईआर दर्ज करवाने के बाद वे जायस पी.एच.सी. गए, जहाँ से उन्हें ज़िला अस्पताल रेफर कर दिया गया; वहीं 05.03.1993 को चोटों के कारण जगेश्वर की मृत्यु हो गई। उन्होंने आगे बताया कि शिकायतकर्ता लल्ला प्रसाद थे, और अपीलकर्ताओं द्वारा किया गया यह हमला ज़मीन को लेकर चल रहे विवाद के कारण हुआ था। उन्होंने आगे गवाही दी कि जिस रात यह घटना हुई, उस रात काफी रोशनी थी।

16. जिरह के दौरान, उन्होंने आगे बयान दिया कि वे मंसिफ मजिस्ट्रेट, डलमऊ की न्यायालय चल रहे जगेश्वर के ज़मीन विवाद में उनके वकील थे, जो घटना से लगभग छह महीने पहले शुरू हुआ था। हालाँकि, वे विवाद से पहले अपीलकर्ताओं को नहीं जानते थे, और न ही उन्होंने इस मामले के संबंध में उनसे कभी बात की थी। उन्होंने आगे बयान दिया कि वे रोज़ाना रायबरेली आते-जाते थे और आमतौर पर शाम को लौटते थे, जब अंधेरा हो चुका होता था, क्योंकि रायबरेली और नसीराबाद के बीच केवल एक ही बस चलती थी। उन्होंने आगे बयान दिया कि घटना का दिन शायद गुरुवार रहा होगा और उस दिन कोई साप्ताहिक बाज़ार नहीं लगता था; बाज़ार आमतौर पर मंगलवार और शनिवार को लगता है। उन्होंने आगे बयान दिया कि उनके भाई इलाहाबाद में तैनात एक हस्तलेख विशेषज्ञ (लिखावट विशेषज्ञ) थे और वहीं रहते थे। उन्होंने आगे बयान दिया कि मृतक और लल्ला प्रसाद साइकिल से नसीराबाद आए थे और वह साइकिल घटना स्थल पर गिर गई थी। उन्होंने आगे बयान दिया कि जगेश्वर को एक चारपाई पर पुलिस स्टेशन ले जाया गया था, लेकिन उन्हें याद नहीं था कि वह चारपाई कौन लाया था। उन्होंने आगे बयान दिया कि उन्हें पहले अशरफपुर ले जाया गया और प्राथमिक उपचार मिलने के बाद, उन्हें एक ट्रैक्टर पर पुलिस स्टेशन ले जाया गया। उन्होंने आगे बयान दिया कि जगेश्वर को पुलिस स्टेशन में होश आ गया था और वे बात करने में सक्षम थे। उन्होंने आगे बयान दिया कि उनका और उनके भाई का बयान पुलिस इंस्पेक्टर द्वारा ज़िला अस्पताल में दर्ज किया गया था। उन्होंने आगे बयान दिया कि घटना के समय ए1 के हाथ में लाठी थी, कुल्हाड़ी नहीं। उन्होंने आगे बयान दिया कि घटना के दौरान उनकी (पीड़ितों की) ओर से कोई जवाबी कार्रवाई नहीं की गई थी। उन्होंने आगे बयान दिया कि यह कहना गलत



होगा कि अंधेरे के कारण अपीलकर्ताओं की पहचान नहीं हो सकी या चोटें किसी और ने पहुँचाई थीं।

17. पीडब्लू -3, हरि प्रकाश खरे ने गवाही दी कि 04.03.1993 को, रात लगभग 8:00 बजे, जब वे (पीड़ित) नसीराबाद से अशरफपुर लौटते समय *मट्टन नाला पुल* पार कर रहे थे, तो अपीलकर्ताओं ने उन पर हमला कर दिया और जागेश्वर, ओम प्रकाश खरे (उनके भाई) और उन्हें खुद को घायल कर दिया। उन्होंने आगे गवाही दी कि आरोपी अशरफपुर के रहने वाले थे और वे घटना से पहले से ही उन्हें जानते थे, क्योंकि उनकी अक्सर मुलाकात होती रहती थी। उन्होंने आगे गवाही दी कि जागेश्वर को एक चारपाई पर लादकर पुलिस स्टेशन ले जाया गया, जबकि उन्हें और उनके भाई को साइकिल पर गांव ले जाया गया; उसके बाद, शुरुआती इलाज मिलने पर, वे अन्य ग्रामीणों के साथ एक ट्रैक्टर पर सवार होकर नसीराबाद पुलिस स्टेशन गए। उन्होंने आगे गवाही दी कि उसी ट्रैक्टर का इस्तेमाल उन्हें जायस पी.एच.सी. ले जाने के लिए किया गया, जहाँ उनका इलाज किया गया और उनके एक्स-रे किए गए। उन्होंने आगे गवाही दी कि आरोपियों के साथ उनकी कोई निजी दुश्मनी नहीं थी और उन पर (पीड़ितों पर) इसलिए हमला किया गया, क्योंकि उन्होंने अपीलकर्ताओं के कामों का विरोध किया था।
18. जिरह के दौरान, उन्होंने आगे बयान दिया कि उन्होंने अशरफपुर में अपने आने के बारे में कोई सूचना नहीं भेजी थी और यह कि जागेश्वर और लल्ला प्रसाद नासिराबाद बाज़ार से घर लौट रहे थे। उन्होंने आगे बयान दिया कि हालाँकि *रास्ते में* उन्हें कई लोग मिले और उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया, लेकिन नासिराबाद और अशरफपुर के बीच उन्हें गाँव के लोग, यानी विश्राम, गयादीन और उदयराज नहीं मिले। उन्होंने आगे बयान दिया कि जब उन्होंने मदद के लिए आवाज़ लगाई, तो वे गाँव वाले बिना किसी हथियार के वहाँ पहुँचे, और उनके पीछे-पीछे दूसरे लोग भी आए, जिनमें से कुछ के पास *लाठियाँ, डंडे* और दूसरे हथियार थे। उन्होंने आगे बयान दिया कि घटना के समय किसी भी आरोपी के पास कुल्हाड़ी नहीं थी। उन्होंने आगे बयान दिया कि गाँव में उन्हें या एडवोकेट ओम प्रकाश को कोई प्राथमिक उपचार नहीं दिया गया और लगभग 15-20 मिनट बाद वे नासिराबाद पुलिस स्टेशन के लिए



रवाना हो गए। उन्होंने आगे बयान दिया कि यह घटना अशरफपुर जाने वाली सड़क पर *मट्टन नाला पुल* से लगभग 200-300 कदम की दूरी पर हुई थी। उन्होंने आगे बयान दिया कि उन्हें जागेश्वर की शारीरिक हालत के बारे में या इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी कि वे किस समय पुलिस स्टेशन पहुँचे। उन्होंने आगे बयान दिया कि यह कहना गलत होगा कि लल्ला प्रसाद घटनास्थल पर मौजूद नहीं थे या यह कि अपीलकर्ताओं को किसी पुरानी दुश्मनी की वजह से झूठा फँसाया जा रहा था।

19. **पीडब्लू-4 एच सी पी राम सहाय भार्गव**, पुलिस थाना सौरसा, ज़िला हरदोई ने गवाही दी कि 04.03.1993 को वे हेड कांस्टेबल के पद पर तैनात थे और उसी दिन रात लगभग 09:15 बजे, लल्ला प्रसाद द्वारा दर्ज कराई गई एक लिखित शिकायत के आधार पर, ए1 और अन्य लोगों के खिलाफ आईपीसी की धारा 323, 325, 504, 506 के तहत केस इम संख्या 13/1993, चिक संख्या 10/1993 (प्रदर्श क-2) पर दर्ज किया गया था, और संबंधित प्रविष्टियाँ जी.डी. रिपोर्ट संख्या 33 (प्रदर्श क-3) में की गई थीं। उन्होंने आगे गवाही दी कि उन्होंने जागेश्वर (प्रदर्श क-4) और ओम प्रकाश तथा हरि प्रकाश (क्रमशः प्रदर्श क-5 और प्रदर्श क-6) के लिए चोट संबंधी पत्र तैयार किए थे। उन्होंने आगे गवाही दी कि 07.03.1993 को, पुलिस थाना कोतवाली, रायबरेली के कांस्टेबल संख्या 315, जनार्दन उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत पोस्टमार्टम रिपोर्ट प्राप्त होने पर, उन्होंने केस में संशोधन किया ताकि आईपीसी की धारा 304 को जोड़ा जा सके और संबंधित प्रविष्टि जी.डी. प्रविष्टि संख्या 29 के माध्यम से लगभग 07:15 पीएम (प्रदर्श क-7) पर की गई।
20. जिरह के दौरान, उन्होंने बयान दिया कि उन्होंने किसी वरिष्ठ अधिकारी या जांच अधिकारी से कोई आदेश या रिपोर्ट प्राप्त किए बिना आरोपों में संशोधन किया था, और उक्त संशोधन पोस्टमार्टम रिपोर्ट और *पंचनामा* के आधार पर किया गया था, क्योंकि इसके लिए किसी वरिष्ठ अधिकारी के आदेश की आवश्यकता नहीं होती है। उन्होंने आगे बयान दिया कि यह ज़रूरी नहीं है कि किसी अपराध में संशोधन से संबंधित प्रविष्टि केवल जांच अधिकारी के आदेश पर ही जी.डी. (जनरल डायरी) में की जाए। उन्होंने आगे बयान दिया कि ओम प्रकाश और हरि प्रकाश के चोट संबंधी पत्र (चोट संबंधी पत्र) कांस्टेबल ओम प्रकाश तिवारी द्वारा तैयार किए गए थे और



उन्हें जी.डी. में दर्ज नहीं किया गया है। उन्होंने आगे बयान दिया कि यह कहना गलत होगा कि चिक एफ आई आर, लिखित रिपोर्ट और एफ आई आर स्टेशन-प्रभारी विनोद प्रकाश श्रीवास्तव के साथ मिलीभगत करके झूठे तौर पर दर्ज की गई थी। उन्होंने आगे बयान दिया कि अपीलकर्ता संख्या 1, भुल्लन, उस समय स्टेशन पर चौकीदार के पद पर तैनात था।

21. पी डब्लू -5 देवी प्रसाद यादव, स्टेशन हेड ककरवाई, जिला झांसी, ने बयान दिया कि 19.03.1993 को, वे पुलिस स्टेशन डीह, जिला रायबरेली में स्टेशन हेड के पद पर तैनात थे। उन्होंने आगे बयान दिया कि इस मामले की जांच शुरू में पुलिस स्टेशन नासिराबाद के श्री वी.वी. श्रीवास्तव कर रहे थे, लेकिन पुलिस अधीक्षक के आदेश पर यह जांच उन्हें सौंप दी गई। उन्होंने आगे बयान दिया कि उन्होंने पंचायतनामा में बताए गए गवाहों के बयान दर्ज किए और घायल व्यक्तियों, यानी ओम प्रकाश और हरि प्रकाश की एक्स-रे रिपोर्ट केस डायरी में दर्ज की। उन्होंने आगे बयान दिया कि शिकायतकर्ता और अन्य गवाहों के बयान दर्ज करने के बाद, उन्होंने घटनास्थल का मुआयना किया, और जांच के दौरान इकट्ठा किए गए सबूतों पर विचार करने के बाद, उन्होंने आरोप-पत्र (प्रदर्शक -8) दाखिल किया।
22. जिरह के दौरान, उसने बयान दिया कि उसने चश्मदीद गवाहों के बयान दर्ज नहीं किए, बल्कि उसने मामले से संबंधित पूछताछ की। उसने आगे बयान दिया कि उसने कोई साइट प्लान तैयार नहीं किया और केवल घटना स्थल का मुआयना किया। उसने आगे बयान दिया कि उसने ग्रामीणों से पूछताछ की, लेकिन उनके बयान या नाम केस डायरी में दर्ज नहीं किए। उसने आगे बयान दिया कि यह कहना गलत होगा कि उसने शिकायतकर्ता के साथ मिलीभगत करके झूठी चार्जशीट पेश की, या यह कि पिछले जांच अधिकारी ने रात के अंधेरे का फायदा उठाकर और अज्ञात व्यक्तियों के बजाय अपीलकर्ताओं को फंसाकर घटना को झूठा रंग दिया।
23. पी डब्लू-6, श्री विनोद प्रकाश, स्टेशन आउटपोस्ट इंचार्ज हेड, करछना पुलिस स्टेशन, जिला इलाहाबाद, ने गवाही दी कि घटना के दिन, वे नासिराबाद पुलिस स्टेशन में स्टेशन हेड के पद पर तैनात थे। उन्होंने आगे गवाही दी कि केस क्राइम संख्या 13/1993, आईपीसी की धारा 323, 325, 504 और 506 के तहत, उनकी मौजूदगी में दर्ज किया



गया था और उन्होंने ही इसकी विवेचना का काम संभाला था। उन्होंने आगे गवाही दी कि 04.03.1993 को, उन्होंने हेड कांस्टेबल राम सहाय भार्गव के बयान के आधार पर *नक़ल चिक एफआईआर* और *नक़ल रपट* तैयार की। 05.03.1993 को, उन्होंने घायल व्यक्तियों की चोट रिपोर्ट प्राप्त की और केस डायरी में उससे संबंधित प्रविष्टियाँ की गईं। उन्होंने आगे गवाही दी कि वे कांस्टेबल महेश प्रसाद द्विवेदी को ज़िला अस्पताल के ऑर्थोपेडिक विभाग में ले गए, जहाँ घायल गवाहों, यानी लल्ला प्रसाद, एडवोकेट ओम प्रकाश खरे, हरि प्रकाश खरे, साथ ही जगेश्वर और गवाह विश्राम के बयान दर्ज किए गए। उन्होंने आगे गवाही दी कि वापस आते समय, उन्होंने आरोपी व्यक्तियों, यानी भुल्लन, ब्रिज लाल और जगत पाल को गिरफ्तार किया, और उनके बयान दर्ज किए। उन्होंने आगे गवाही दी कि 06.03.1993 को, उक्त कांस्टेबल के साथ, वे घटनास्थल पर गए और गवाहों – गयादीन, उदयराज और ट्रैक्टर चालक मो. ज़हूर के बयान दर्ज किए। उस समय, शिकायतकर्ता भी वहाँ आ गया और, उसके बताने पर, उन्होंने घटनास्थल का नक्शा तैयार किया (प्रदर्श क-9)। उन्होंने आगे गवाही दी कि 07.03.1993 को, उन्हें मृतक जगेश्वर की पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिली और, उसके आधार पर, अपराध को जी.डी. एंट्री संख्या 29 के माध्यम से आईपीसी की धारा 304 में बदल दिया गया (लगभग 19:15 पीएम पर) और केस डायरी में उससे संबंधित प्रविष्टि की गई। उन्होंने आगे बयान दिया कि 09.03.1993 को, उन्होंने डलमऊ के मुंसिफ मजिस्ट्रेट की न्यायालय से वारंट जारी करने की मांग की, और 16.03.1993 को, *पंचायतनामा* की प्रति केस डायरी में दर्ज की गई। उन्होंने आगे बयान दिया कि न्यायालय की अनुमति मिलने पर, सूरज पाल का बयान भी दर्ज किया गया। उन्होंने आगे बयान दिया कि उसके बाद, जांच एक अन्य सब-इंस्पेक्टर को सौंप दी गई।

24. जिरह के दौरान, उसने बयान दिया कि सूरज पाल ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था, जबकि अन्य आरोपियों ने आरोपों से इनकार किया। उसने इस सुझाव से इनकार किया कि सूरज पाल के इकबालिया बयान को दर्ज करने के संबंध में न्यायालय को कोई रिपोर्ट नहीं भेजी गई थी। उसने इस आरोप से इनकार किया कि उसने घटना को झूठा रंग देने के लिए शिकायतकर्ता के साथ मिलीभगत की थी, या यह कि दुश्मनी के कारण अपीलकर्ताओं को झूठा फंसाया जा रहा था। उसने आगे बयान दिया कि शिकायतकर्ता



- और घायल व्यक्ति का बयान पहले दर्ज नहीं किया जा सका, क्योंकि वे तुरंत अस्पताल चले गए थे, जहाँ से उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। उसने आगे बयान दिया कि उसे एडवोकेट ओम प्रकाश खरे के खिलाफ सीआर.पी.सी. की धारा 107/116 के तहत किसी भी कार्यवाही की कोई जानकारी नहीं थी। उसने आगे बयान दिया कि यह कहना गलत होगा कि घटना स्थल के आसपास का क्षेत्र कंकड़ और पत्थरों से भरा था, क्योंकि वहाँ की सड़क ईंटों से बनी सड़क (खड़ंगा सड़क) थी। उसने इस सुझाव से भी इनकार किया कि एडवोकेट ओम प्रकाश खरे के प्रभाव में अपीलकर्ताओं को झूठा फंसाया गया था।
25. **पीडब्लू -7, डॉ. एस.एस. त्रिवेदी**, सीनियर रेडियोलॉजिस्ट, जिला अस्पताल, सीतापुर ने गवाही दी कि 10.03.1993 को वे जिला अस्पताल, रायबरेली में सीनियर रेडियोलॉजिस्ट के पद पर तैनात थे। उन्होंने आगे गवाही दी कि घायल गवाह हरि प्रकाश, जिसे 05.03.1993 को भर्ती किया गया था, को हड्डी रोग विशेषज्ञ (हड्डी रोग विशेषज्ञ) द्वारा रेडियोलॉजिकल जांच के लिए भेजा गया था। उनकी एक्स-रे प्लेटें एक्स-रे टेक्नीशियन द्वारा उनकी देखरेख में तैयार की गईं, और उनकी जांच करने पर, उन्हें बाएं पैर की टिबिया हड्डी के शाफ्ट में फ्रैक्चर और दाएं पैर की टिबिया और फिबुला दोनों हड्डियों के शाफ्ट में फ्रैक्चर मिले (एक्स-रे रिपोर्ट क्रमशः एक्सट का-10 और प्रदर्श क-11 के रूप में चिह्नित हैं)। उन्होंने आगे गवाही दी कि घायल अधिवक्ता ओम प्रकाश की एक्स-रे जांच भी उनकी देखरेख में की गई थी, और एक्स-रे की जांच करने पर उन्हें दाएं हाथ की कलाई (फोरआर्म) की रेडियस हड्डी के शाफ्ट में फ्रैक्चर, और बाएं पैर की फिबुला हड्डी के शाफ्ट तथा पटेला (घुटने की हड्डी) में फ्रैक्चर मिले (एक्स-रे रिपोर्ट क्रमशः प्रदर्श क-12 और प्रदर्श क-13 के रूप में चिह्नित हैं)। उन्होंने आगे गवाही दी कि उसी दिन, ओम प्रकाश के बाएं हाथ की एक्स-रे प्लेट भी तैयार की गई थी, जिसमें दूसरी, तीसरी और चौथी मेटा-कार्पल हड्डियों में फ्रैक्चर दिखाई दिए।
26. जिरह के दौरान, उसने कहा कि इस तरह के फ्रैक्चर लगभग 20-25 फीट की ऊंचाई से, कंकड़-पत्थरों वाली किसी खुरदरी सतह पर गिरने से भी हो सकते हैं।
27. **पीडब्लू -8 डॉ. यू.सी. शर्मा**, सीनियर स्पेशलिस्ट, जिला अस्पताल रायबरेली ने गवाही दी कि 07.03.1993 को वे जिला अस्पताल रायबरेली में सीनियर डर्मेटोलॉजिस्ट के पद पर



तैनात थे और उसी दिन दोपहर लगभग 3:00 बजे, मृतक जागेश्वर का पोस्टमॉर्टम किया गया। उन्होंने आगे गवाही दी कि शव को सील करके स्टेशन-इन-चार्ज, पुलिस थाना नसीराबाद द्वारा भेजा गया था। उन्होंने आगे गवाही दी कि जागेश्वर की मृत्यु 06.03.1993 को सुबह लगभग 5:40 बजे जिला अस्पताल रायबरेली में हुई थी। मृतक का शरीर सामान्य था, उसके सिर पर पट्टी बंधी थी, और दोनों अग्रबाहु (फोरआर्म) तथा बांहों पर भी पट्टियाँ बंधी थीं। उन्होंने आगे गवाही दी कि पट्टी बाएं पैर से लेकर जांघ के मध्य भाग तक फैली हुई थी। उन्होंने आगे गवाही दी कि शरीर के ऊपरी हिस्से में अकड़न (रिगोर मोर्टिस) समाप्त हो चुकी थी, लेकिन निचले हिस्से में मौजूद थी; दोनों आँखें बंद थीं, और शरीर पर पहने कपड़े खून से सने हुए थे। मृत्यु से पूर्व शरीर पर निम्नलिखित चोटें थीं:

- चोट संख्या 1- 6 सीएम X 0.5 सीएम माप का फटा हुआ घाव, खोपड़ी के बाईं ओर, बाईं भौंह से 7 सीएम ऊपर, जो खोपड़ी की त्वचा तक गहरा था। चोट पर पट्टी बंधी हुई थी।
- चोट संख्या 2- 1 सीएम X 5 सीएम माप का खरोंचों सहित नील (नील), दाहिने हाथ की अनामिका (अनामिका) के प्रॉक्सिमल फैलेक्स पर।
- चोट संख्या 3- चाकू से लगा घाव, माप 1.5 सीएम X 0.5 सीएम, मांस के अंदर तक गहरा, दाहिनी कोहनी से 5 सीएम पीछे, दाहिनी बांह के पिछले हिस्से पर तिरछा।
- चोट संख्या 4- चाकू से लगा घाव, माप 1 सीएम X 5सीएम , मांसपेशी के अंदर तक गहरा, दाहिनी कलाई से 3cm ऊपर, दाहिनी बांह के पिछले हिस्से पर तिरछा।
- चोट संख्या 5- टांकों वाला घाव (तीन टांके), माप 6 सीएम X 2सीएम, हड्डी तक गहरा, बाईं बांह के अंदरूनी तरफ, दाहिनी कलाई से 2.5 सीएम ऊपर। चोट के नीचे की हड्डी टूटी हुई थी और घाव से बाहर निकली हुई थी।
- चोट संख्या 6- फटा हुआ घाव, माप 3 सीएम X 2सीएम, हड्डी तक गहरा; चोट के नीचे हड्डी टूटी हुई थी और घाव से बाहर निकली हुई थी। यह चोट बाएं पैर पर थी; बाईं एड़ी से 4 सीएम ऊपर, सामने की तरफ।



28. आंतरिक परीक्षण करने पर यह पाया गया कि चोट संख्या 1 के नीचे और दिमाग के बीच वाले हिस्से के ऊपर खून के थक्के मौजूद थे। उन्होंने अपनी राय दी कि मौत का कारण सदमा और खून का बहना था, जो मौत से पहले लगी चोटों की वजह से हुआ था। उन्होंने आगे बयान दिया कि मृतक को लगी चोटें मौत का कारण बनने के लिए काफी थीं। उन्होंने आगे यह भी कहा कि चोट संख्या 3 और 4 को छोड़कर, बाकी चोटें *लाठियों या डंडों* से लग सकती थीं। उन्होंने आगे यह भी कहा कि चोट संख्या 3 और 4 किसी धारदार चीज़ से लग सकती थीं; उन्होंने इस संभावना पर राय दी कि शायद किसी धारदार डंडे का इस्तेमाल किया गया हो। न्यायालय द्वारा पूछे जाने पर, उन्होंने बताया कि उन्हें 'हुरा' के बारे में कोई जानकारी नहीं है, लेकिन अगर वह धारदार होता, तो उससे इस तरह की चोटें लग सकती थीं।
29. जिरह के दौरान, उसने बयान दिया कि चोट संख्या 3 और 4 किसी चौड़े धार वाले हथियार से नहीं लग सकतीं, बल्कि वे किसी तेज़ धार वाले हथियार से लग सकती हैं। उसने आगे बयान दिया कि चाकू के घाव-चोट संख्या 3 और 4-किसी तेज़ नोक वाले हथियार से लग सकते थे, और यदि हथियार तेज़ नहीं होता, तो चाकू के घाव नहीं हो सकते थे। उसने आगे बयान दिया कि चोट संख्या 3 और 4 किसी तेज़ पत्थर पर गिरने से भी लग सकती थीं। उसने आगे बयान दिया कि उसे इस बात की जानकारी नहीं है कि घायल जागेश्वर की मृत्यु से पहले रायबरेली के जायस पी.एच.सी. में उसका इलाज हुआ था या नहीं; इस बात का ज़िक्र न तो पोस्टमार्टम रिपोर्ट में है और न ही उसे किसी मेडिकल रिपोर्ट में यह बात मिली है। उसने आगे बयान दिया कि जागेश्वर की मृत्यु रायबरेली के ज़िला अस्पताल में हुई थी। उसने आगे बयान दिया कि इस तरह के चाकू के घाव इलाज के दौरान भी लग सकते थे, यदि डॉक्टर ऑपरेशन करने के लिए किसी तेज़ औज़ार का इस्तेमाल करे। उसने आगे बयान दिया कि मृतक की चोट रिपोर्ट 04.03.1993 को जायस पी. एच.सी. के एक डॉक्टर द्वारा तैयार की गई थी, और उस मेडिकल रिपोर्ट में चार चोटों का ज़िक्र है, लेकिन चाकू के किसी घाव का ज़िक्र नहीं है।
30. **पीडब्लू-9, डॉ. के.पी.एस. चौहान**, कुष्ठ रोग अधिकारी, पलिया, जिला लखीमपुर, ने गवाही दी कि 04.03.1993 को वे पी.एच.सी. जायस में चिकित्सा अधिकारी के पद पर तैनात थे और उसी दिन रात लगभग 10:45 बजे उन्होंने जगेश्वर की चोटों का



इलाज किया, जिसे कांस्टेबल 345 श्याम शंकर सिंह, पुलिस थाना नसीराबाद, लेकर आए थे। निम्नलिखित चोटें पाई गईं:

- चोट संख्या 1- 6सीएम X 8सीएम X 2सीएम माप का कंपाउंड फ्रैक्चर (जटिल अस्थिभंग), दाहिने पैर के निचले हिस्से में गहराई तक, टखने के जोड़ से 5 सीएम ऊपर, जिससे ताज़ा खून बह रहा था। इसे निगरानी में रखा गया।
- चोट संख्या 2- 8सीएम X 5सीएम माप का कंट्यूशन (चोट/खरोंच), दाहिनी हथेली के ऊपरी हिस्से पर, जिसमें दर्द और सूजन मौजूद थी। रंग में लाल। इसे निगरानी में रखा गया।
- चोट संख्या 3- 5सीएम X 3सीएम X 2सीएम माप का कंपाउंड फ्रैक्चर, गहराई में स्थित, बाईं कलाई के जोड़ से 5 सीएम ऊपर, जिससे ताज़ा खून बह रहा था।
- चोट संख्या 4- 3सीएम X 1सीएम X 5सीएम गहराई का लैसररेटेड घाव (कटा हुआ घाव), सिर के बाईं ओर, हेयरलाइन (बालों की सीमा) से 4 सीएम की दूरी पर, माथे के बाईं ओर।

उन्होंने आगे बताया कि चोट संख्या 1 किसी कुंद चीज़ से लगी हो सकती है और बाएं पैर का एक्स-रे कराने की सलाह दी गई। उन्होंने आगे बताया कि चोट संख्या 2, 3 और 4 किसी कुंद चीज़ से लगी हो सकती है और चारों चोटों के लिए एक्स-रे कराने की सलाह दी गई (चोट की रिपोर्ट प्रदर्शक-15 के तौर पर मार्क की गई है)। उन्होंने आगे बताया कि चोटें ताज़ा थीं और 04.03.1993 को रात करीब 8 बजे लगी होंगी और चोटें किसी कुंद चीज़ जैसे डंडे से लगी होंगी।

31. उसने आगे बयान दिया कि उसी दिन, घायल ओम प्रकाश की चोटों का चिकित्सीय परीक्षण रात लगभग 11:00 बजे की गई, जिसे वही कांस्टेबल लेकर आया था जिसका जिक्र ऊपर किया गया है। विवेचना में निम्नलिखित चोटें पाई गईं:

- चोट संख्या 1- दाहिने घुटने पर 8सीएम X 5सीएम का एक खरोंच का निशान था, जिसमें सूजन थी और चोट लगी थी; मरीज़ ने दर्द की शिकायत की। इसका रंग लाल था। इस चोट को निगरानी में रखा गया।
- चोट संख्या 2- दाहिने पैर पर 6सीएम X 1सीएम X 2सीएम गहरी एक कटी हुई चोट थी, जो दाहिने घुटने से 18 सीएम नीचे थी, जिससे ताज़ा खून बह रहा था।



- चोट संख्या 3- दाहिने पैर पर 3सीएम X 1सीएम X 2सीएम गहरी एक फटी हुई चोट थी, जो चोट संख्या 2 से 3 सीएम अंदर की तरफ थी, जिससे ताज़ा खून बह रहा था।
- चोट संख्या 4- दाहिनी हथेली के बाहरी हिस्से पर 8सीएम X 3सीएम का एक खरोंच का निशान था, जिसमें दर्द और सूजन थी। इसका रंग लाल था। इसे निगरानी में रखा गया।
- चोट संख्या 5- बाईं हथेली के बाहरी हिस्से पर 1सीएम X 5सीएम X 2सीएम गहरी एक फटी हुई चोट थी, जिससे ताज़ा खून बह रहा था।
- चोट संख्या 6- बाएं हाथ पर 5सीएम X 3सीएम का एक खरोंच का निशान था, जो कलाई से 5 सीएम ऊपर था, जिसमें दर्द और सूजन मौजूद थी। इसका रंग लाल था।

उन्होंने आगे बयान दिया कि चोट संख्या 1 से 6 किसी भी हथियार से लगी हो सकती है, उदाहरण के लिए लाठी-डंडे से। चोट संख्या 2, 3 और 5 साधारण थीं। उन्होंने आगे बयान दिया कि चोट संख्या 1 और 6 के लिए एक्स-रे करवाने की सलाह दी गई थी। उन्होंने आगे बयान दिया कि ये सभी चोटें ताज़ा थीं और 04.03.1993 को रात करीब 8:00 बजे लगी हो सकती हैं (चोट रिपोर्ट को प्रदर्शक 16 के रूप में चिह्नित किया गया है)।

32. उन्होंने आगे बयान दिया कि उसी दिन, रात लगभग 11:10 बजे, उन्होंने हरि प्रकाश के शरीर पर लगी चोटों की भी विवेचना की थी, और उन्हें निम्नलिखित चोटें मिलीं:

- चोट संख्या 1- दाहिने पैर पर 10 सीएम X 8 सीएम माप का एक नील (चोट), जो दाहिने टखने से 8 सीएम ऊपर था; इसमें दर्द और सूजन मौजूद थी। इसका रंग लाल था।
- चोट संख्या 2- बाएँ पैर पर 5 सीएम X 2 सीएम माप का एक नील, जो बाएँ टखने से 12 सीएम ऊपर था; इसमें दर्द और सूजन मौजूद थी। इसका रंग लाल था।

उन्होंने आगे बयान दिया कि चोट संख्या 1 और 2 किसी कुंद चीज़, जैसे कि लाठी से लग सकती थीं। उन्होंने आगे बताया कि दोनों चोटों के लिए एक्स-रे करवाने की सलाह दी गई थी और दोनों ही चोटें ताज़ा थीं। उन्होंने आगे यह भी कहा कि ये चोटें 04.03.1993



को रात लगभग 8:00 बजे लगी हो सकती हैं(चोट की रिपोर्ट को प्रदर्शक क-17 के रूप में चिह्नित किया गया है)।

33. जिरह के दौरान, उसने बयान दिया कि चोटें रात 8:00 बजे से 10:00 बजे के बीच लगी हो सकती हैं। उसने आगे बयान दिया कि तीनों व्यक्तियों को चोटें तब लग सकती थीं, जब वे नदी के किनारे पड़े पत्थरों से टकराकर गिर गए हों; और इसी तरह की स्थिति में, यदि सड़क पर बड़े पत्थर या पत्थरों के टुकड़े पड़े हों, तो उन पर ज़ोर से गिरने से भी ऐसी चोटें लग सकती हैं। उसने आगे बयान दिया कि मृतक जागेश्वर की चोट रिपोर्ट (प्रदर्शक क-15) में बताई गई चोट संख्या 4, 3 सेमी X 1 सेमी X 0.5 सेमी गहरी थी। उसने आगे बयान दिया कि वह चोट 0.5 सेमी जितनी गहरी नहीं थी, बल्कि सिर की त्वचा (खोपड़ी की खाल) तक ही गहरी थी। उसने आगे बयान दिया कि चोट संख्या 4, जैसा कि उसने चोट रिपोर्ट में बताया था, बालों की रेखा से 7 सेमी ऊपर नहीं थी, बल्कि 4 सेमी ऊपर थी, और उसे उस पर कोई खरोंच या नील का निशान नहीं मिला।
34. पीडब्लू -10, एस.आई. साधना गुप्ता, सब-इंस्पेक्टर, गाजीपुर पुलिस स्टेशन, जिला लखनऊ ने गवाही दी कि घटना के दिन वह रायबरेली पुलिस स्टेशन में सब-इंस्पेक्टर के पद पर तैनात थीं। उन्होंने आगे गवाही दी कि उन्हें रात लगभग 8:10 बजे जिला अस्पताल, रायबरेली से आमद मेमो और जगेश्वर की मृत्यु के मेमो के साथ नकल रपट संख्या 11 प्राप्त हुई थी। इसके बाद उन्होंने मृतक का पंचायतनामा (प्रदर्शक क-19) तैयार किया। उन्होंने आगे गवाही दी कि उन्होंने मृतक का पोस्टमार्टम कराने के लिए ज़रूरी कागजात भी तैयार किए थे, जैसे: आर.आई. को संबोधित पत्र (प्रदर्शक क-21), सी.एम.ओ. को संबोधित पत्र (प्रदर्शक क-22), चालान लाश (प्रदर्शक क-23), शव का स्केच (प्रदर्शक क-24) और सील की प्रति (प्रदर्शक क-25)।
35. जिरह के दौरान, उन्होंने बताया कि पंचायतनामा तैयार करते समय, घायल व्यक्ति की चोटों पर पट्टियाँ बंधी हुई थीं और उसका पूरा सिर पट्टी से ढका हुआ था उन्होंने आगे बताया कि उन्होंने यह तो लिखा था कि पट्टियाँ बंधी हुई हैं, लेकिन यह नहीं लिखा था कि पूरा सिर पट्टी से ढका हुआ था।

न्यायालय विश्लेषण

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिये प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



स्वतंत्र गवाहों की विवेचना न किए जाने का प्रभाव:

36. इस बात पर विचार किया जाना है कि क्या स्वतंत्र गवाहों की विवेचना न होने के कारण अभियोजन पक्ष का मामला दोषपूर्ण हो गया है। अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने यह तर्क दिया कि, चूंकि वे ग्रामीण—यानी विश्राम, गयादीन और उदयराज—जो कथित तौर पर घटनास्थल पर पहुँचे थे, उन्हें साक्ष्य के रूप में पेश नहीं किया गया, इसलिए एक प्रतिकूल निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए था और संबंधित तथा घायल गवाहों की गवाही पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए।
37. इस पहलू पर कानूनी स्थिति पूरी तरह से तय है। अभियोजन पक्ष को गवाहों की संख्या बढ़ाने की ज़रूरत नहीं है, और एफआईआर में बताए गए या घटनास्थल पर मौजूद सभी लोगों से पूछताछ न करने से ही, अपने आप अभियोजन पक्ष के मामले पर कोई संदेह पैदा नहीं होता। ज़रूरी बात सबूतों की गुणवत्ता है, न कि उनकी मात्रा। जहाँ घायल प्रत्यक्षदर्शियों की गवाही एक जैसी, स्वाभाविक और भरोसेमंद होती है, वहाँ स्वतंत्र गवाहों की गैर-मौजूदगी घातक नहीं होती। सुप्रीम कोर्ट ने **हेम राज बनाम हरियाणा राज्य, एआईआर 2005 एससी 2110; एच.पी. बनाम प्रदीप कुमार (2018) 13 एससीसी 808; और सुरिंदर कुमार बनाम पंजाब राज्य (2020) 2 एससीसी 563** के ज़रिए लगातार यह माना है कि ऐसा कोई सार्वभौमिक नियम नहीं बनाया जा सकता कि स्वतंत्र गवाहों से पूछताछ न करने पर अभियोजन पक्ष के बयान को ज़रूरी तौर पर खारिज कर दिया जाए। न्यायालय को यह आकलन करना होता है कि जिन गवाहों से पूछताछ की गई है, वे भरोसेमंद हैं या नहीं, और क्या उनका बयान रिकॉर्ड पर मौजूद मेडिकल और अन्य भौतिक सबूतों से मेल खाता है।
38. इस मामले में, पीडब्लू-2 एडवोकेट ओम प्रकाश और पीडब्लू-3 हरि प्रकाश घायल गवाह हैं, जिन्हें उसी घटना में चोटें लगी थीं। घटना स्थल पर उनकी मौजूदगी, उसी रात जैस पी.एच.सी. में हुए उनके मेडिकल परीक्षण से पूरी तरह से साबित होती है; उनके शरीर पर ताज़ा चोटें पाई गईं, जो घटना के समय से पूरी तरह मेल खाती हैं। इन घायल गवाहों का प्रत्यक्ष विवरण ठोस, सुसंगत और पूरी तरह से स्वाभाविक पाया गया है। उनके बयानों को मेडिकल सबूतों से भी काफी हद तक



पुष्टि मिलती है, जिसमें चोट की रिपोर्टें(प्रदर्श क-15, क-16, क-17), एक्स-रे रिपोर्टें, और साथ ही मृतक की पोस्टमार्टम रिपोर्ट शामिल हैं।

39. सिर्फ इसलिए कि अभियोजन पक्ष ने उन अन्य ग्रामीणों को पेश नहीं किया जो हमले के बाद वहाँ पहुँचे थे, अभियोजन पक्ष की पूरी कहानी को खारिज नहीं किया जा सकता। यह बात भली-भाँति स्थापित है कि घायल गवाहों की गवाही को ज़्यादा महत्व दिया जाता है, क्योंकि इस बात की संभावना सबसे कम होती है कि वे असली हमलावरों को बचाने की कोशिश करेंगे और उनकी जगह किसी निर्दोष व्यक्ति को फंसाएँगे। मौजूदा मामले में, घायल गवाहों ने लगातार यही बयान दिया है कि अपीलकर्ताओं के पास *लाठियाँ और डंडे* थे, और उन्होंने मृतक जागेश्वर, पीडब्लू-2 और पीडब्लू-3 पर हमला किया था, जिससे उन्हें चोटें आईं। घटनास्थल पर उनकी मौजूदगी स्वाभाविक थी और इसकी पूरी तरह से व्याख्या की गई है; इसलिए, पीडब्लू-2 और पीडब्लू-3 की गवाही पर सिर्फ इस आधार पर शक नहीं किया जा सकता कि उनके बीच कोई आपसी संबंध है।
40. अक्सर यह देखा जाता है कि गाँव वाले सामने आने और कोर्ट में गवाही देने से हिचकिचाते हैं, खासकर तब जब आरोपी व्यक्ति उसी इलाके के हों। इसलिए, अभियोजन पक्ष द्वारा इन गाँव वालों से पूछताछ न करने को, उसके केस के लिए घातक नहीं माना जा सकता; विशेष रूप से तब, जब घायल गवाहों की भरोंसेमंद और पुष्ट गवाही उपलब्ध हो।

उद्देश्य, पूर्व-योजना और अपराध की प्रकृति (धारा 304 आईपीसी बनाम धारा 325 आईपीसी)

41. अभियुक्त-अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने यह तर्क दिया कि अभियोजन पक्ष अपीलकर्ताओं की ओर से किसी भी हेतुक या पूर्व-नियोजन को साबित करने में विफल रहा है, और यह कि, भले ही अभियोजन पक्ष के कथन को पूरी तरह से स्वीकार कर लिया जाए, तब भी यह मामला आईपीसी की धारा 325 के दायरे से बाहर नहीं जाएगा। यह ज़ोर देकर कहा गया कि अपीलकर्ताओं को न तो ऐसा कोई इरादा था और न ही ऐसी कोई जानकारी थी कि उनके द्वारा पहुंचाई गई चोटों के परिणामस्वरूप मृतक की मृत्यु हो जाएगी।
42. हेतुक के सवाल पर कानून पूरी तरह से तय है। जब स्पष्ट, ठोस और भरोंसेमंद प्रत्यक्षदर्शी सबूत मौजूद हों, तो किसी अपराध को साबित करने के लिए हेतुक होना



अनिवार्य शर्त नहीं है। हेतुक का सबूत मुख्य रूप से उन मामलों में महत्वपूर्ण हो जाता है, जो परिस्थितिजन्य सबूतों पर आधारित होते हैं। जहाँ प्रत्यक्षदर्शियों-विशेष रूप से घायल गवाहों-के सीधे सबूत उपलब्ध हों और वे भरोसे लायक हों, वहाँ हेतुक की गैर-मौजूदगी या कमी अभियोजन पक्ष के मामले को कमजोर नहीं करती। साथ ही, यदि हेतुक साबित हो जाता है, तो यह अभियोजन पक्ष के बयान को और अधिक पुख्ता बनाता है।

43. इस मामले में, अभियोजन पक्ष ने न केवल घायल प्रत्यक्षदर्शियों के सीधे सबूत पेश किए हैं, बल्कि उसने हेतुक (उद्देश्य) के अस्तित्व को भी साबित किया है। पीडब्लू-1 लल्ला प्रसाद, पीडब्लू-2 ओम प्रकाश खरे और पीडब्लू-3 हरि प्रकाश ने मृतक जगेश्वर और अपीलकर्ताओं के बीच चल रहे ज़मीन के विवाद के बारे में लगातार गवाही दी है। यह विवाद घटना की तारीख से काफी पहले से चला आ रहा था, और यहाँ तक कि जिरह (प्रति-परीक्षण) के दौरान भी इसे मूल रूप से स्वीकार किया गया है। पीडब्लू-2, जो पेशे से एक वकील हैं, ने विशेष रूप से कहा है कि वह उक्त विवाद में मृतक का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, जो सक्षम न्यायालय के समक्ष लंबित था। इसलिए, पहले से चली आ रही दुश्मनी का अस्तित्व रिकॉर्ड पर साबित हो गया है।

44. जिस तरह से यह घटना घटी, उससे साफ़ तौर पर यह भी पता चलता है कि इसमें पहले से सोची-समझी योजना शामिल थी। सबूतों से पता चलता है कि अपीलकर्ता पहले से ही *मट्टन नाले* के पास मौजूद थे, उनके पास *लाठियाँ और डंडे* थे, और वे घात लगाकर बैठे थे। जैसे ही मृतक और घायल गवाह उस जगह पर पहुँचे, अपीलकर्ताओं ने उन्हें रोक लिया, उनके साथ गाली-गलौज की और मिलकर उन पर हमला कर दिया। यह हमला न तो अचानक हुआ था और न ही कोई दुर्घटना थी; बल्कि, यह हमला शुरू में मृतक और पीडब्लू 2 पर किया गया था, और उसके बाद पीडब्लू -3 पर किया गया, जब उसने बीच-बचाव करने की कोशिश की। मृतक को लगी चोटों की प्रकृति, संख्या और गंभीरता—जिसमें कई जगह हड्डियाँ टूटना भी शामिल हैं—साफ़ तौर पर यह साबित करती है कि यह हमला जान-बूझकर और बेरहमी से किया गया था।

45. घटना से पहले, उसके दौरान और उसके बाद अपीलकर्ताओं का आचरण, इस निष्कर्ष को और पुष्ट करता है कि यह एक सोची-समझी साज़िश थी। अपीलकर्ताओं ने मिलकर काम किया, पहले से ही हथियार जुटा लिए थे, पीड़ितों पर सुनियोजित तरीके से हमला



किया और गाँव वालों के आने के बाद ही, धमकी देते हुए, घटनास्थल से भागे।
ऐसा आचरण किसी अचानक या बिना सोचे-समझे हुई घटना से पूरी तरह से मेल नहीं खाता।

चिकित्सा और प्रत्यक्ष साक्ष्य के बीच कथित विरोधाभास

46. अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने यह तर्क दिया है और इस बात पर जोर दिया है कि रिकॉर्ड पर मौजूद मेडिकल और प्रत्यक्ष(आंख का) सबूतों के बीच विरोधाभास देखे गए हैं। आपराधिक न्यायशास्त्र का यह एक सुस्थापित सिद्धांत है कि जब भरोसेमंद गवाहों की प्रत्यक्ष गवाही मेडिकल सबूतों के साथ पूरी तरह से मेल खाती है और उनकी पुष्टि करती है, तो अभियोजन पक्ष का मामला काफी मज़बूत हो जाता है। मेडिकल सबूत मूल रूप से राय-आधारित होते हैं और इनका उद्देश्य न्यायालय को रिकॉर्ड पर उपलब्ध प्रत्यक्ष सबूतों को समझने में मदद करना होता है। यह प्रत्यक्ष गवाही को केवल तभी अमान्य कर सकता है, जब दोनों के बीच कोई सीधा और ऐसा विरोधाभास हो जिसे सुलझाया न जा सके। ऐसे किसी भी विरोधाभास के अभाव में, प्रत्यक्ष गवाही को ही उचित प्राथमिकता दी जानी चाहिए। जैसा कि *महावीर सिंह बनाम मध्य प्रदेश राज्य, (2016) 10 एससीसी 220* मामले में कहा गया है)
47. अपीलकर्ताओं की ओर से यह दलील दी गई थी कि प्रत्यक्षदर्शी बयान और मेडिकल सबूतों के बीच, खासकर चोट संख्या 3 और 4 के संबंध में, एक बड़ा विरोधाभास मौजूद है; इस न्यायालय ने इस दलील की सावधानीपूर्वक विवेचना की है।
48. बताया गया है कि यह घटना 04.03.1993 को रात लगभग 8:00 बजे हुई थी, और बाद में घायल व्यक्ति ने उन चोटों के कारण दम तोड़ दिया जो उसे इस घटना में लगी थीं। पोस्टमार्टम विवेचना 07.03.1993 को दोपहर 3:00 बजे पीडब्लू-8, डॉ. यू.सी. शर्मा, सीनियर स्पेशलिस्ट, जिला अस्पताल, रायबरेली द्वारा की गई थी; उन्होंने पोस्टमार्टम रिपोर्ट को प्रमाणित किया और मृतक के शरीर पर पाई गई चोटों के बारे में विस्तार से बयान दिया। शरीर की स्थिति, चोटों की 'एंटी-मॉर्टम' (मृत्यु-पूर्व) प्रकृति, और पोस्टमार्टम के दौरान दर्ज किए गए आंतरिक निष्कर्ष—ये सभी अभियोजन पक्ष के गवाहों द्वारा स्थापित घटना के समय और तरीके से पूरी तरह मेल खाते हैं बचाव पक्ष द्वारा कोई भी ऐसी बड़ी विसंगति नहीं बताई गई है, जिससे मेडिकल समय-रेखा



को अविश्वसनीय ठहराया जा सके।

49. अपीलकर्ताओं ने मुख्य रूप से चोट संख्या 3 और 4 पर ज़ोर दिया है, जिन्हें पोस्टमार्टम रिपोर्ट में 'चाकू के घाव' (छुरा घोंपने के घाव) के रूप में वर्णित किया गया है। ट्रायल कोर्ट ने इन चोटों पर पूरी सावधानी से विचार किया है। ये दोनों चोटें बांह के पिछले हिस्से पर स्थित हैं—जो कि गिरने के परिणामस्वरूप लगने वाली चोटों के लिए एक आम जगह है, खासकर तब जब कोई व्यक्ति ज़ोरदार वार लगने के बाद ज़मीन पर गिर पड़ता है। जान-बूझकर चाकू मारने के मामलों में आमतौर पर शरीर के इस हिस्से को निशाना नहीं बनाया जाता है। इसके अलावा, इन चोटों के आकार और प्रकृति से भी ट्रायल कोर्ट द्वारा निकाले गए निष्कर्ष को ही बल मिलता है। जहाँ एक ओर इन घावों की चौड़ाई अपेक्षाकृत कम है (क्रमशः लगभग 0.5 सेमी और 1 सेमी), वहीं दूसरी ओर इनकी लंबाई अनियमित है और इनका रुख तिरछा है; जिससे यह संकेत मिलता है कि ये चोटें किसी सीधी भेदन शक्ति (सीधा भेदन बल) के बजाय किसी फिसलते हुए प्रभाव (फिसलनदार प्रभाव) के कारण लगी हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में घावों के किनारों के साफ-सुथरे होने (साफ-सुथरे किनारे), घाव के सिरे पर बनी पूंछ जैसी आकृति (टेलिंग), या किनारों पर खरोंच के निशान (मामूली खरोंचें) का कोई ज़िक्र नहीं है—जो कि आमतौर पर धारदार हथियारों से लगने वाली चोटों के साथ जुड़े होते हैं।

50. इसके अलावा, पीडब्लू-8, डॉ.यू.सी. शर्मा ने अपनी गवाही में, यह साफ तौर पर नहीं कहा है कि चोट संख्या 3 और 4 किसी धारदार हथियार से लगी थीं। इसके विपरीत, उनकी गवाही इस संभावना को खारिज नहीं करती कि ऐसी चोटें पत्थरों और कंकड़ों वाली किसी कठोर सतह पर ज़ोर से गिरने के कारण लगी हो सकती हैं। मौजूदा मामले में, जहाँ हमला ईंटों से बनी सड़क (खड़जा सड़क) पर हुआ था और मृतक पर लाठियों से कई वार किए गए थे, ट्रायल कोर्ट द्वारा निकाला गया यह निष्कर्ष कि मृतक ज़मीन पर ज़ोर से गिरा होगा, जिससे उसे चोट संख्या 3 और 4 लगी होंगी, न तो असंभव कहा जा सकता है और न ही गलत।

51. यह बात भी ध्यान देने लायक है कि, हालाँकि बचाव पक्ष ने एक कुल्हाड़ी (एक्स) के इस्तेमाल की बात सामने लाने की कोशिश की थी, लेकिन इस बात की पुष्टि न तो पीडब्लू-2 और पीडब्लू-3 की आँखों देखी गवाही से होती है, और न ही विवेचना के



दौरान हुई किसी बरामदगी से। ट्रायल कोर्ट ने इस सुझाव को सही ही खारिज कर दिया है, और इस कोर्ट को कोई ऐसा कारण नज़र नहीं आता कि वह इससे अलग कोई राय रखे।

52. इसके अलावा, जैसा कि पीडब्लू-8 ने अपनी राय दी है, मौत का कारण कुंद चोट (कुंद बल आघात) से लगी कई चोटों का मिला-जुला असर था। चोट संख्या 3 और 4 के बारे में यह नहीं कहा गया था कि वे, सामान्य परिस्थितियों में, अकेले ही मौत का कारण बनने के लिए काफी थीं। इसलिए, भले ही यह मान भी लिया जाए कि ये दोनों चोटें किस तरह लगीं, इस बारे में कुछ अस्पष्टता है, फिर भी इससे अभियोजन पक्ष का मामला कमजोर नहीं पड़ता, क्योंकि मौत का कारण इन चोटों से अलग, स्वतंत्र रूप से साबित हो चुका है।
53. ट्रायल कोर्ट ने प्रत्यक्ष और मेडिकल, दोनों तरह के सबूतों की सावधानीपूर्वक और पूरी तरह से विवेचना की है, और सही निष्कर्ष निकाला है कि अपराध करते समय किसी भी धारदार हथियार का इस्तेमाल नहीं किया गया था। यह निष्कर्ष कि चोट संख्या 3 और 4 गलती से लगी थीं—जो मृतक को कुंद चीज़ से चोट लगने के बाद गिरने से लगी थीं—मज़बूत मेडिकल तर्क पर आधारित है और इसमें कोई भी गैर-कानूनी बात या गड़बड़ी नहीं है।
54. इसके अलावा, अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ताद्वारा *कृष्णगौड़ा और अन्य बनाम कर्नाटक राज्य, (2017) 13 एससीसी 98; अब्दुल सईद बनाम मध्य प्रदेश राज्य, (2010) 10 एससीसी 259; और दरबारा सिंह बनाम पंजाब राज्य, (2012) 10 एससीसी 476* पर किया गया भरोसा गलत है, क्योंकि उनमें बताए गए सिद्धांत केवल वहीं लागू होते हैं जहाँ मेडिकल सबूत आँखों देखा बयान को पूरी तरह से खारिज कर देते हैं, या जहाँ कोई बड़ी विरोधाभासी बात अभियोजन पक्ष के मामले की बुनियाद पर ही चोट करती है। ऐसी स्थिति इस मौजूदा मामले में पैदा नहीं होती, जहाँ आँखों देखा बयान एक जैसा, विश्वसनीय है और मेडिकल सबूतों से उसकी ठीक से पुष्टि भी हुई है।
55. इस स्थापित कानूनी स्थिति को देखते हुए कि प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य (प्रत्यक्ष प्रमाण) आमतौर पर तब तक मान्य होता है, जब तक कि चिकित्सा साक्ष्य (चिकित्सीय साक्ष्य) उसे पूरी तरह से खारिज न कर दे; और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए



कि प्रस्तुत मामले में चिकित्सा साक्ष्य, प्रत्यक्षदर्शी के बयान की उचित पुष्टि करता है, यह न्यायालय, चिकित्सा और प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य के बीच कथित विरोधाभास के संबंध में अपीलकर्ताओं के तर्क में कोई दम नहीं पाता है। तदनुसार, इस पहलू पर विचारण न्यायालय (विचारण न्यायालय) द्वारा दिए गए निष्कर्षों की पुष्टि की जाती है।

रात के समय की घटना - पहचान की कथित असंभवता और झूठा फंसाया जाना

56. अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने यह तर्क दिया है कि यह घटना रात के समय हुई थी, और इसलिए, वहाँ रोशनी का कोई पर्याप्त स्रोत उपलब्ध नहीं था जिससे गवाह हमलावरों की पहचान कर सकें। इसी आधार पर, यह दलील दी गई कि अपीलकर्ताओं को पुरानी रंजिश के चलते झूठा फंसाया गया है, और ऐसी पहचान पर आधारित दोषसिद्धि मान्य नहीं है।
57. शुरू में, यह ध्यान देना प्रासंगिक है कि घटना का समय लगातार रात 8:00-8:30 बजे के आसपास बताया गया है। अभियोजन पक्ष के गवाहों ने घटना को घने अंधेरे में घटित होना नहीं बताया है। इसके विपरीत, पीडब्लू-2 ओम प्रकाश खरे ने अपनी गवाही में स्पष्ट रूप से कहा है कि घटना वाली रात *रोशनी* थी। जिरह के दौरान इस बात को प्रभावी ढंग से गलत साबित नहीं किया जा सका है।
58. माननीय ट्रायल कोर्ट ने इस पहलू पर विस्तार से विचार किया है और वर्ष 1993 के *पंचांग* का न्यायिक संज्ञान लिया है, जिससे यह पता चलता है कि घटना की तारीख, यानी 04.03.1993, *शुक्ल पक्ष की एकादशी* थी। उस रात, चाँदनी काफी थी। ट्रायल कोर्ट ने सही ही यह टिप्पणी की है कि ऐसी परिस्थितियों में, जाने-पहचाने लोगों की पहचान करना न केवल संभव है, बल्कि स्वाभाविक भी है। इस कोर्ट को उक्त तर्क में कोई विकृति या कानूनी खामी नज़र नहीं आती। यह बात भली-भांति स्थापित है कि चाँदनी में की गई पहचान को केवल इसलिए खारिज नहीं किया जा सकता कि घटना रात में हुई थी, विशेष रूप से तब, जब आरोपी व्यक्ति गवाहों के पहले से ही परिचित हों।
59. प्रस्तुत मामले में, अपीलकर्ता और गवाह एक ही गाँव के निवासी हैं। पीडब्लू-3 हरि प्रकाश ने विशेष रूप से कहा है कि घटना से पहले वे अभियुक्तों को बार-बार होने



- वाली मुलाकातों के कारण जानते थे। इसी प्रकार, पीडब्लू-1 और पीडब्लू-2 ने भी अपीलकर्ताओं के साथ अपनी पूर्व जान-पहचान और ज़मीन के मौजूदा विवाद के बारे में गवाही दी है। जहाँ हमलावर जाने-पहचाने लोग हों, वहाँ तेज़ या कृत्रिम रोशनी के स्रोत की आवश्यकता काफी हद तक कम हो जाती है, क्योंकि पहचान केवल चेहरे-मोहरे पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि आवाज़, कद-काठी, चाल-ढाल और कुल मिलाकर आपसी जान-पहचान पर भी निर्भर करती है।
60. इसके अलावा, झूठे फंसाए जाने की दलील भी भरोसे लायक नहीं लगती। इस घटना में तीन लोगों को गंभीर चोटें आईं और अंततः जागेश्वर की मृत्यु हो गई। ऐसी परिस्थितियों में, यह बहुत ही असंभव है कि घायल गवाह असली हमलावरों को छोड़ दें और केवल पुरानी दुश्मनी के कारण अपीलकर्ताओं को झूठा फंसाएं, खासकर तब जब अपीलकर्ता उन्हीं के गांव के रहने वाले हैं और वे उन्हें अच्छी तरह जानते हैं।
61. अतः, तथ्यों और परिस्थितियों की समग्रता, पर्याप्त चाँदनी की उपलब्धता, पक्षों के बीच पूर्व परिचय, घायल गवाहों की सुसंगत प्रत्यक्ष गवाही और अभियुक्त के तत्काल आचरण पर विचार करते हुए, यह न्यायालय इस सुविचारित मत पर पहुँचा है कि अपीलकर्ताओं की पहचान दृढ़तापूर्वक स्थापित है। इस मुद्दे पर विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा दर्ज किया गया निष्कर्ष साक्ष्य के सुदृढ़ मूल्यांकन पर आधारित है और इसमें किसी भी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है।
62. इसके अलावा, यह तर्क भी गलत है कि यह अपराध आईपीसी की धारा 325 से आगे नहीं जाएगा। आईपीसी की धारा 325 और धारा 304 के बीच का अंतर केवल चोटों की प्रकृति में ही नहीं, बल्कि उस कार्य से होने वाली मृत्यु की जानकारी और संभावना में भी निहित है। आईपीसी की धारा 304 लागू होने के लिए, यह ज़रूरी नहीं है कि मृत्यु कारित करने का कोई जान-बूझकर किया गया इरादा हो। इसके लिए जो चीज़ ज़रूरी है, वह यह जानकारी है कि उस कार्य से मृत्यु होने की संभावना है; और इस जानकारी का अनुमान, परिस्थितियों की समग्रता से लगाया जाना चाहिए।
63. इस मामले में, 46 वर्षीय मृतक पर कई हमलावरों ने कठोर और भोथरे हथियारों से बेरहमी से हमला किया। उसे जो चोटें लगीं, वे बहुत गंभीर थीं, जिसके कारण उसे बार-बार मेडिकल इलाज की ज़रूरत पड़ी और अंततः उसकी मृत्यु हो गई। हमले के



समय से लेकर मृतक की मृत्यु तक की घटनाओं की कड़ी, लगी चोटों और उसके घातक परिणाम के बीच एक स्पष्ट और सीधा संबंध स्थापित करती है। यह मृत्यु किसी बाहरी कारण से नहीं, बल्कि इस घटना में लगी चोटों का सीधा परिणाम थी।

64. इसलिए, ट्रायल कोर्ट ने सही निष्कर्ष निकाला है कि अपीलकर्ताओं को अपने कृत्यों से यह आवश्यक ज्ञान था कि ऐसा हमला मृत्यु का कारण बन सकता है, और यह कि किए गए अपराध को केवल आईपीसी की धारा 325 के तहत आने वाले अपराध तक सीमित नहीं किया जा सकता। ट्रायल कोर्ट द्वारा दर्ज किया गया निष्कर्ष साक्ष्यों के सही मूल्यांकन और कानून के स्थापित सिद्धांतों पर आधारित है, और इसमें ऐसी कोई त्रुटि नहीं है जिसके लिए इसमें हस्तक्षेप की आवश्यकता हो।

आईपीसी की धारा 504 की प्रयोज्यता

65. अपीलकर्ताओं के विद्वान अधिवक्ता ने आगे यह तर्क दिया है कि आईपीसी की धारा 504 के तहत अपीलकर्ताओं की दोषसिद्धि कानून की दृष्टि से पूरी तरह से अमान्य है, क्योंकि उक्त अपराध के आवश्यक तत्व अभियोजन पक्ष के साक्ष्यों में मौजूद नहीं हैं।
66. आईपीसी की धारा 504 का दायरा और विस्तार अधिकारपूर्वक निर्धारित हो चुका है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने **मोहम्मद वाजिद बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, (2023)** 20 एससीसी 219 मामले में यह निर्णय दिया है:

“29. आईपीसी की धारा 504 में किसी व्यक्ति का जान-बूझकर अपमान करना और इस तरह अपमानित व्यक्ति को शांति भंग करने के लिए उकसाना, या किसी व्यक्ति का जान-बूझकर अपमान करना, यह जानते हुए कि अपमानित व्यक्ति उकसाए जाने पर सार्वजनिक शांति भंग कर सकता है या कोई अन्य अपराध कर सकता है, शामिल है। केवल गाली-गलौज करना इस धारा के दायरे में नहीं आ सकता है। लेकिन, किसी खास मामले में गाली-गलौज वाले शब्द जान-बूझकर किए गए अपमान के बराबर हो सकते हैं, जो अपमानित व्यक्ति को सार्वजनिक शांति भंग करने या कोई अन्य अपराध करने के लिए उकसाते हैं। यदि अपमानजनक भाषा का प्रयोग जान-बूझकर किया जाता है और वह इस प्रकृति की है कि सामान्य परिस्थितियों में वह अपमानित व्यक्ति को शांति भंग करने या कानून के तहत कोई अपराध करने के लिए प्रेरित कर सकती है, तो मामला इस धारा के दायरे से केवल इसलिए बाहर नहीं हो जाता कि



अपमानित व्यक्ति ने वास्तव में शांति भंग नहीं की या कोई अपराध नहीं किया, क्योंकि उसने आत्म-नियंत्रण रखा या अपराधी के कारण वह अत्यधिक भयभीत हो गया था।”

67. इसी प्रकार, *फियोना श्रीखंडे बनाम महाराष्ट्र राज्य, (2013) 14 एससीसी 44* के मामले में, माननीय उच्चतम न्यायालय ने यह अभिनिर्धारित किया है:

“13. आईपीसी की धारा 504 में निम्नलिखित तत्व शामिल हैं, अर्थात्: (a) जानबूझकर अपमान करना, (b) अपमान ऐसा होना चाहिए जिससे अपमानित व्यक्ति को उकसावा मिले, और (c) आरोपी का इरादा या जानकारी यह होनी चाहिए कि ऐसे उकसावे से कोई अन्य व्यक्ति सार्वजनिक शांति भंग कर सकता है या कोई अन्य अपराध कर सकता है। जानबूझकर किया गया अपमान इस हद तक होना चाहिए कि वह किसी व्यक्ति को सार्वजनिक शांति भंग करने या कोई अन्य अपराध करने के लिए उकसा सके। जो व्यक्ति जानबूझकर इस इरादे से या यह जानते हुए अपमान करता है कि इससे किसी अन्य व्यक्ति को उकसावा मिलने की संभावना है, और ऐसे उकसावे के कारण सार्वजनिक शांति भंग हो सकती है या कोई अन्य अपराध हो सकता है, तो ऐसी स्थिति में, धारा 504 के तत्व पूरे माने जाते हैं। इस अपराध को गठित करने वाले आवश्यक तत्वों में से एक यह है कि कोई ऐसा कार्य या आचरण हुआ हो जो जानबूझकर किए गए अपमान की श्रेणी में आता हो; और केवल इस तथ्य के आधार पर कि आरोपी ने शिकायतकर्ता को गाली दी, अपने आप में आईपीसी की धारा 504 के तहत दोषसिद्धि के लिए पर्याप्त नहीं है।”

68. ऊपर बताए गए सिद्धांतों को इस मामले के तथ्यों पर लागू करते हुए, यह न्यायालय पाती है कि अभियोजन पक्ष धारा 504 आईपीसी के तहत अपराध साबित करने में नाकाम रहा है। लिखित रिपोर्ट के साथ-साथ पीडब्लू-1, पीडब्लू-2 और पीडब्लू-3 की गवाहियों को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि, हालाँकि अपीलकर्ताओं पर "गालियाँ" देने का एक आम आरोप लगाया गया है, फिर भी न तो शिकायत में और न ही मौखिक सबूतों में उन खास शब्दों का जिक्र है जिनका कथित तौर पर इस्तेमाल किया गया था, और न ही इसमें कथित अपमानजनक भाषा की प्रकृति, लहजे या संदर्भ का वर्णन किया गया है। रिकॉर्ड पर ऐसा कोई भी सबूत मौजूद नहीं है जिससे यह पता चले



- कि कथित तौर पर कहे गए शब्द इस तरह के थे कि, आम हालात में, वे अपमानित व्यक्ति को सार्वजनिक शांति भंग करने या कोई अन्य अपराध करने के लिए उकसा सकें।
69. इस संबंध में लगाए गए आरोप अस्पष्ट, व्यापक और पूरी तरह से विवरणों से रहित हैं। अभियोजन पक्ष यह साबित नहीं कर पाया है कि कथित दुर्यवहार जानबूझकर किया गया था, किसी को निशाना बनाकर किया गया था, या उसका उद्देश्य शांति भंग करने के लिए उकसाना था; और न ही यह साबित हो पाया है कि अपीलकर्ताओं के पास आईपीसी की धारा 504 के तहत अपेक्षित इरादा या जानकारी थी। केवल अपमानजनक या अभद्र भाषा का इस्तेमाल करना—बिना उसकी प्रकृति का खुलासा किए और बिना कानून द्वारा परिकल्पित परिणामी उकसावे का सबूत दिए—आईपीसी की धारा 504 की कानूनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता है।
70. इस मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए, जहाँ अभियोजन पक्ष कथित तौर पर इस्तेमाल की गई अपमानजनक भाषा को स्पष्ट करने में विफल रहा है, और यह साबित नहीं कर पाया है कि वह भाषा इतनी गंभीर थी कि उससे सार्वजनिक शांति भंग होने की आशंका हो, वहाँ आईपीसी की धारा 504 के तहत अपीलकर्ताओं की दोषसिद्धि को कायम नहीं रखा जा सकता। विद्वान विचारण न्यायालय ने, आईपीसी की धारा 504 के तहत अपीलकर्ताओं को दोषी ठहराते समय, ऐसा प्रतीत होता है कि उसने केवल गाली-गलौज के एक सामान्य आरोप के आधार पर ही कार्यवाही आगे बढ़ाई, बिना इस बात की विवेचना किए कि क्या उस अपराध के लिए आवश्यक कानूनी तत्व पूरे हुए थे। तदनुसार, इस न्यायालय का सुविचारित मत है कि अपीलकर्ताओं के विरुद्ध आईपीसी की धारा 504 के तहत कोई अपराध बनता हुआ प्रतीत नहीं होता। इसलिए, आईपीसी की धारा 504 के तहत अपीलकर्ताओं की दोषसिद्धि और दंडादेश को अपास्त किया जाता है।

निष्कर्ष

71. रिकॉर्ड पर मौजूद पूरे सबूतों की पूरी तरह से फिर से जांच करने के बाद, और ऊपर बताए गए कारणों से, इस न्यायालय की यह राय है कि अभियोजन पक्ष ने बिना किसी उचित संदेह के यह सफलतापूर्वक साबित कर दिया है कि अपीलकर्ता संख्या 2 सूरज पाल, अपीलकर्ता संख्या 3 ब्रिज लाल और अपीलकर्ता संख्या 4 जगत पाल ने, अपने



- साझा इरादे को पूरा करने के लिए, मृतक जागेश्वर और घायल गवाहों पर हमला किया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः जागेश्वर की मृत्यु हो गई। माननीय ट्रायल कोर्ट द्वारा आईपीसी की धारा 34 के साथ पढ़ी जाने वाली धारा 304, आईपीसी की धारा 34 के साथ पढ़ी जाने वाली धारा 325, आईपीसी की धारा 34 के साथ पढ़ी जाने वाली धारा 323 और आईपीसी की धारा 506(2) के तहत दंडनीय अपराधों के संबंध में दर्ज किए गए दोष के निष्कर्ष ठोस, विश्वसनीय और भरोसेमंद सबूतों पर आधारित हैं, और उनमें कोई विकृति, अवैधता या कोई ऐसी बड़ी अनियमितता नहीं है जिसके लिए इस न्यायालय के हस्तक्षेप की आवश्यकता हो।
72. तथापि, जहाँ तक आईपीसी की धारा 504 के तहत दोषसिद्धि का प्रश्न है, इस न्यायालय का यह मत है कि वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में उक्त अपराध के आवश्यक तत्व सिद्ध नहीं होते हैं; क्योंकि अभियोजन पक्ष ऐसे किसी जानबूझकर किए गए अपमान को साबित करने में विफल रहा है, जिससे शांति भंग होने या किसी अपराध के घटित होने की संभावना उत्पन्न हो। परिणामस्वरूप, आईपीसी की धारा 504 के तहत अपीलकर्ताओं की दोषसिद्धि और दंडादेश को एतद्वारा रद्द किया जाता है।
73. तदनुसार, अपील आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है। अपीलकर्ता संख्या 2 सूरज पाल, अपीलकर्ता संख्या 3 ब्रिज लाल और अपीलकर्ता संख्या 4 जगत पाल की आईपीसी की धारा 504 के तहत दोषसिद्धि रद्द की जाती है, जबकि आईपीसी की धारा 34 के साथ पठित धारा 304, आईपीसी की धारा 34 के साथ पठित धारा 323, आईपीसी की धारा 34 के साथ पठित धारा 325 और आईपीसी की धारा 506(2) के तहत उनकी दोषसिद्धि की पुष्टि की जाती है।
74. जहाँ तक सज़ा के सवाल का संबंध है, इस न्यायालय ने इस बात पर विचार किया है कि यह घटना वर्ष 1993 की है, कि यह अपील दो दशकों से भी अधिक समय से लंबित है, और यह कि सभी जीवित अपीलकर्ता या तो लगभग पचास वर्ष के हैं या उससे अधिक आयु के हैं।
75. मामले के समग्र तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, और न्याय की मांगों तथा निष्पक्षता के विचारों के बीच संतुलन बनाते हुए, इस न्यायालय की यह



- राय है कि विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा दी गई सज़ा में संशोधन किया जाना उचित है। तदनुसार, अपीलकर्ताओं की दोषसिद्धि को उपर्युक्त प्रावधानों के तहत बरकरार रखते हुए, उन्हें धारा 34 आईपीसी के साथ पठित धारा 304 आईपीसी के तहत दंडनीय अपराध के लिए, प्रत्येक को दस वर्ष के कठोर कारावास की सज़ा दी जाती है; तथा शेष अपराधों के लिए दी गई सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी।
76. इसके अलावा, पीड़ितों के परिवारों को पर्याप्त सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से, इस न्यायालय का यह मत है कि ट्रायल कोर्ट द्वारा लगाया गया 2,000/- रुपये का जुर्माना बढ़ाकर प्रत्येक जीवित अपीलकर्ता पर 20,000/- रुपये कर दिया जाए, और जुर्माने की कुल राशि, यानी 60,000/- रुपये, उचित पहचान और सत्यापन के बाद, जगेश्वर (मृतक) के कानूनी वारिसों को मुआवजे के रूप में समान रूप से वितरित की जाए। यदि जुर्माना अदा करने में चूक होती है, तो संबंधित अपीलकर्ता को एक वर्ष की अतिरिक्त कठोर कारावास की सज़ा भुगतनी होगी।
77. अपीलकर्ता वर्तमान में ज़मानत पर हैं। उन्हें आज से 15 दिनों के भीतर संबंधित न्यायालय के समक्ष आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया जाता है; ऐसा न करने पर, संबंधित न्यायालय द्वारा अपीलकर्ताओं को हिरासत में ले लिया जाएगा और सज़ा पूरी करने के लिए जेल भेज दिया जाएगा। ज़मानत बांड रद्द माने जाएँगे और ज़मानतदार दायित्व-मुक्त हो जाएँगे।
78. इस निर्णय की एक प्रति, विचारण न्यायालय के अभिलेख के साथ, सूचना और अनुपालन हेतु संबंधित न्यायालय को तत्काल प्रेषित की जाए।

(जफ़ीर अहमद, न्यायमूर्ति) (रजनीश कुमार, न्यायमूर्ति)

16 जनवरी, 2026

कन्हैया